Class-XII

Hindi Core(302)

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

2

खंड - क

(कार्यालयी हिंदी और रचनात्मक लेखन)

1. मोबाइल खेलों की बढ़ती लत

"फायर, शील्ड, बंदा मारा गया, नोक्टो गन" - ये शब्द किसी युद्ध के मैदान में लड़ते सैनिकों के नहीं बल्कि मोबाइल खेलों की लत और नशे में पूर्णतया डूबे आजकल के बच्चों, स्कूली विद्यार्थियों और युवाओं के हैं। पबजी, फ्री फायर, बैटल ग्राउंड, क्लेश ऑफ क्लैन्स, ड्रीम इलेवन, रम्मी, एम.पी.एल. और ना जाने कितने नाम। आजकल के बच्चे व युवा इन मोबाइल खेलों के मायावी जाल और आकर्षण में इस प्रकार फँस चुके हैं कि अभिभावकों व शिक्षकों के लाख समझाने पर भी ये लत छोड़ नहीं पाते। इनमें से कुछ खेलों में तो वित्तीय जोखिम भी शामिल है, ये बात जानकर भी लोग इन्हें खेलते हैं। इन खेलों की लत से युवा अपना समय और ऊर्जा दोनों ही बर्बाद करते हैं। साथ ही, ये उनके सामाजिक जीवन को भी प्रभावित करते हैं। मिशिगन एवं ऑक्सफॉर्ड के अनेकों शोध यह प्रमाणित कर चुके हैं सप्ताह में दस या उससे अधिक घंटे इस प्रकार के खेलों में बिताने वाले व्यक्तियों के व्यवहार में अंतर आता है। वे अन्य लोगों

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

से घुलने - मिलने की जगह मोबाइल पर वक्त बिताना पसंद करते हैं एवं सामाजिक आयोजनों पर जाने से कतराते हैं। आँखों और मानसिक सेहत को हानि पहुँचाने के साथ - साथ ये ~~शारि~~ शारीरिक स्वास्थ्य व क्षमताओं को भी प्रभावित करते हैं। पढ़ाई में एकाग्रता को भी ये खेल घटाते हैं। भारत में सरकार ने इस प्रकार के कुछ खेलों को प्रतिबंधित करके एक प्रयास किया है परंतु जंग अभी बहुत बाकी है। इसके लिए स्कूल - कॉलेजों में जागरूकता फैला कर एवं ~~अन्य~~ तरह के प्रतिबंध लगाकर कुछ निजात पाया जा सकता है परंतु स्थायी समाधान तो हमारे ही हाथ में है। हमें यह समझना होगा कि ये सिर्फ़ आई.टी. कंपनियों के जाल हैं जो हमें कोई लाभ नहीं देने वाले।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

4

2. (क) ~~16, लाजपत नगर~~ संपादक के नाम पत्र

परीक्षा भवन,
सीकर।

2 मई, 2022

सेवामें,
संपादक महोदय,
दैनिक भास्कर,
जयपुर।

विषय: मलिकपुर ग्राम ~~में~~ व अन्य ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च शिक्षण संस्थानों के बाबत।

महोदय,
मैं आपके प्रतिष्ठित दैनिक पत्र के माध्यम से सरकार व ~~सं~~ संबंधित अधिकारियों का ध्यान ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च शिक्षण संस्थानों के अभाव की ओर दिलाना चाहूँगी। ~~मेरे~~ अपने पैतृक गाँव मलिकपुर में

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

दस हजार से अधिक आबादी होने के बावजूद एक भी उच्च शिक्षण संस्थान नहीं है। यहाँ के युवाओं को पढ़ने के लिए 50 किमी. दूर सीकर जाना पड़ता है। सबसे अधिक प्रभावित छात्राएँ होती हैं। अन्य गाँवों के भी हालात कुछ बेहतर नहीं है।

शिक्षा मूलभूत आवश्यकता है और इस मामले में तुरंत प्रयास होने चाहिए। आशा है कि आप मेरे विचारों को अपने अखबार में स्थान देकर संबंधित लोगों तक इस मुद्दे को पहुँचाने का प्रयास करेंगे।

सधन्यवाद।

भवदीया,
क. ख. ग.

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

3. (i)

(ब) कहानी के पात्रों का नाटक में कहानी की तरह चरित्र-चित्रण संभव नहीं है। इसीलिए नाटक नाट्य रूपांतरण में पात्रों को प्रभावशाली बनाने के लिए संवाद योजना व अभिनय का सहारा लिया जाता है। संवादों व पात्र की भाव-भंगिमाओं से उनके चरित्र को उद्घाटित किया जा सकता है। किसी घटना पर उनकी प्रतिक्रिया व अभिनय के द्वारा मंच पर उनके चरित्र को उभारा जा सकता है। दूसरे पात्रों के उनके बारे में संवादों द्वारा भी यह काम बखूबी किया जा सकता है।

3. (ii)

(अ) रेडियो नाटक के लिए ध्यान रखना चाहिए कि :-

- समय सीमा कम रखी जाए (15-30 मिनट)।
- पात्रों की संख्या 5-6 के आसपास हो।
- कहानी एक्शन (बहुत अधिक गतिविधियाँ) आधारित न हो।

4. (i)

(अ) समाचार लेखन की सबसे लोकप्रिय एवं बुनियादी शैली उल्टा पिरामिड शैली है। इसका विकास अमेरिका में गृहयुद्ध के दौरान हुआ। यह 19 वीं सदी के मध्य में प्रचलित हुई।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

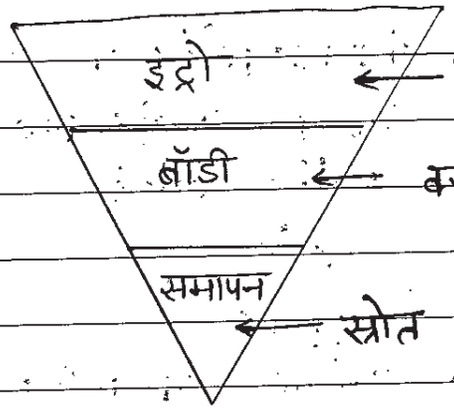

इंट्रो ← क्या, कब, कहाँ, कौन (विवरणात्मक)

बॉडी ← क्यों, कैसे (विश्लेषणात्मक)

समापन ← स्रोत, उद्धरण

इसमें छः ककारों का उत्तर दिया जाता है। ये ककार रुड्यार्ड किप्लिंग ने दिए थे। इसमें सबसे महत्त्वपूर्ण बात सबसे पहले और आगे उसी प्रकार लिखी जाती है। इसमें क्लाइमेक्स सबसे पहले दिया जाता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

4. (ii)

(अ) बीट रिपोर्टिंग के तहत सब संवाददाताओं व पत्रकारों के क्षेत्र विभाजित कर दिए जाते हैं, जैसे खेल जगत, अर्थव्यवस्था या सिनेमा से संबंधित बीट रिपॉर्टिंग। बीट रिपो रिपोर्टर बनने के लिए व्यक्ति को निम्नलिखित प्रयास करने पड़ेंगे :-

- उस क्षेत्र में गहरा ज्ञान व जुड़ाव।
- उस क्षेत्र से जुड़े लोगों से निरंतर बातचीत।
- उस क्षेत्र की गहराइयों व तकनीकी शब्दावली का ज्ञान व उन्हें सरल भाषा में पाठकों को समझा पाने की योग्यता।

ये सारी चीजे बीट रिपोर्टर बनने के लिए आवश्यक हैं ताकि पाठकों तक जानकारी व संबंधित खबरें समग्रता व स्पष्टता से पहुँचाई जा सकें।

उदाहरण के लिए, खेल जगत से संबंधित बीट रिपोर्टर को खेल की बारीकियों व खिलाड़ियों के बारे में जानकारियाँ होना चाहिए। खेल की समय-सीमा व नियमों से संबंधित जानकारियाँ होनी चाहिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

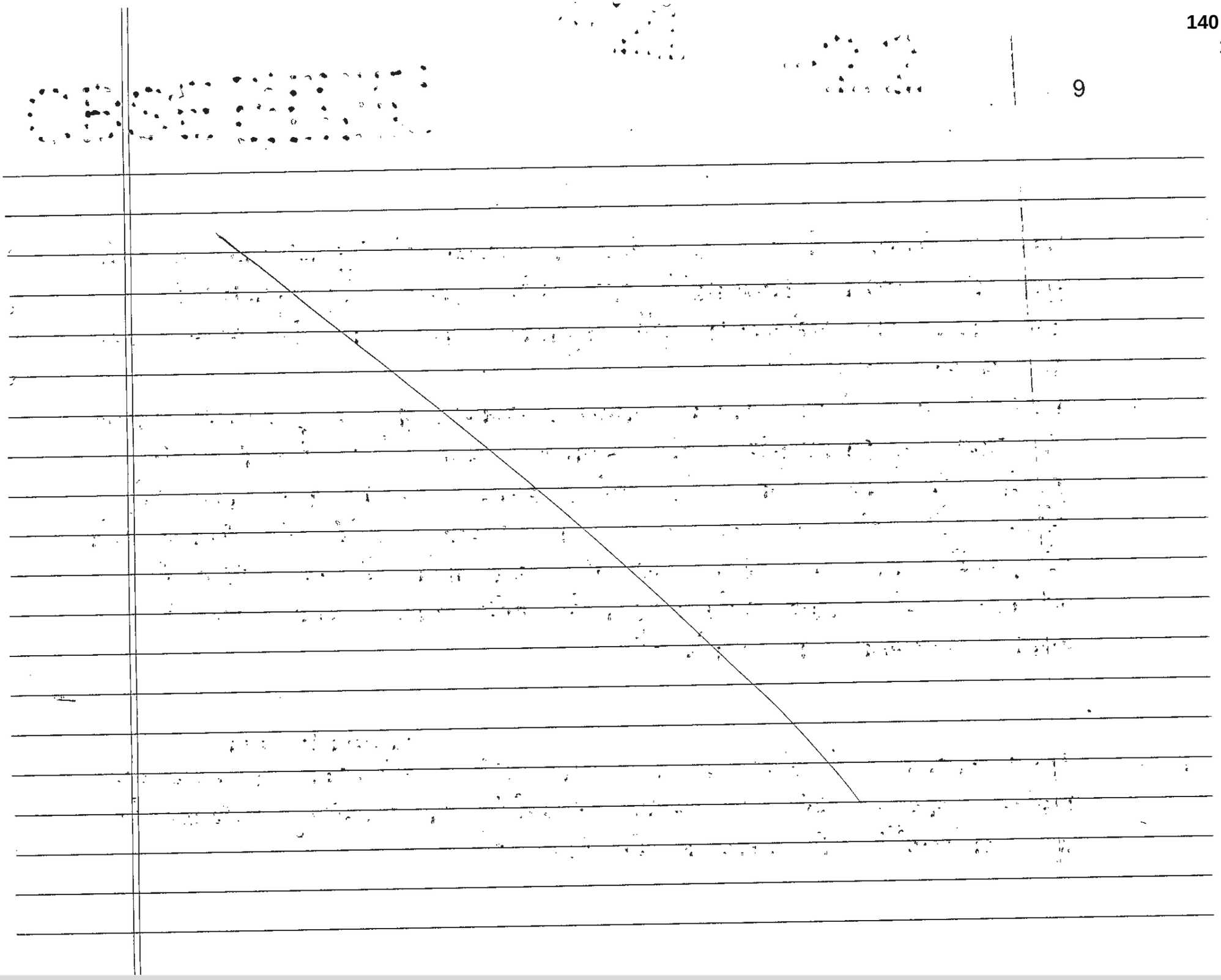

CBSE EXT

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

10

खंड - ख

5. (ii) 'खेती न किसान को' - इस छंद के माध्यम से 'तुलसीदास' ने अपने युग की आर्थिक विषमताओं का वर्णन किया है। 'तुलसी' ने उस वक्त की बेरोजगारी और भुखमरी की छवि को चित्रित करने का प्रयास किया है।
तुलसी ने कहा है कि कृषक, बनिया, चाकर, कुम्हार, व्याप्रसी किसी के पास जीविकोपार्जन की व्यवस्था नहीं है। पेट की आग्नि बुझाने के लिए सब ऊँचे-नीचे, उचित-अनुचित कर्म करने को तैयार हैं। पेट के लिए ही तो पढ़ाई करते हैं, शिकार करते हैं, यहाँ तक कि गिरि पर भी चढ़ जाते हैं पर फिर भी जीविका नहीं कमा पाते। अब तो सारे विघ्न हरता राम ही सबकी सहायता कर सकते हैं।

5. (i) 'उषा' कविता में भोर के नभ का वर्णन प्रयोगवादी कवि आंचलिक उपन्यासकार 'शमशेर बहादुर सिंह' ने नवीन उपमानों व ग्रामीण परिवेश से जुड़े विशेषणों की सहायता से किया है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

कविता में पल - पल परिवर्तित भोर के दृश्य का गतिशील वर्णन किया है जो चौका लीपे जाने के बाद सिल पर खड़िया पीसने और फिर बच्चों के हाथ में स्लेट देने में स्पष्ट है।

भोर के नभ को नीले शंख के समान बताकर उसकी पवित्रता, काली सिल पर बिखरे केसर के समान लालिमा से उसकी उज्जवलता व स्लेट पर खड़िया मलने का दृश्य उसकी निर्मलता को उद्घाटित कर रहा है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्र. 06

6. (i) 'पहलवान की ढोलक' कहानी में आंचलिक उपन्यासकार 'फणीश्वर नाथ रेणु' ने प्राचीन लोक कलाओं के संरक्षण का संदेश अत्यंक मार्मिक तरीके से दिया है।
इनके पुनर्जीवन के लिए निम्नलिखित प्रयास किए जा सकते हैं:-

↳ सरकार द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों व मेलों का आयोजन किया जा सकता है, जैसे - पुष्कर का ऊँट मेला।

↳ पहलवानी व अन्य पारंपरिक खेलों के खिलाड़ियों को ~~संरक्षण~~ विशेष खेल कोटा देकर प्रोत्साहित करने का प्रयास किया जा सकता है।

↳ राष्ट्रीय टेलीविजन व दूरदर्शन पर संबंधित कार्यक्रम प्रसारित करवाकर।

↳ लोगों का स्वयं इस प्रकार के खेलों एवं गतिविधियों में भाग लेकर।

↳ सोशल मीडिया पर स्थानीय कलाकारों द्वारा जागरूकता फैलाकर आदि।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्र. 06

(ii) राजनीतिक सीमा रेखाएँ लोगों के सामाजिक यथार्थ को ही बदल सकती हैं उनके हार्दिक यथार्थ को नहीं। 'नमक' कहानी में सफिया का सिख बीबी के लिए कानून तोड़कर सौहार्द की सौगात - नमक पाकिस्तान से हिंदुस्तान लेकर आना इसे प्रमाणित करता है।

लाहौर में कस्टम ऑफिसर का नमक ले जाने देना और यह कहना कि 'मेरा वतन तो देहली है जी।' दिखाता है कि दोनों ओर मुहब्बत अब भी मौजूद है।

इसी तरह सुनील दास गुप्त का कहना कि मेरा वतन तो ढाका है यह प्रमाणित करता है। इस प्रकार 'रज़िया सज्जाद ज़हीर' ने कहानी के माध्यम से बँटवारे के दर्द को प्रस्तुत किया है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्र. 6

(iii) 'श्रम विभाजन और जाति प्रथा' पाठ से स्पष्ट है कि यह आर्थिक विकास में बाधक है। इसके निम्नलिखित कारण है :-

↳ जाति प्रथा भारत में बेरोजगारी का प्रमुख कारण है।

↳ यह लोगों को अपनी रुचि के विपरीत काम करने को विवश जिससे मनुष्य में कम काम करने व टालू काम करने की प्रवृत्ति बढ़ती है।

↳ बदलते आर्थिक परिवेश में लोगों को पेशा बदलने की आवश्यकता पड़ती है लेकिन जाति प्रथा इसकी अनुमति नहीं देती व इंसान को भुखमरी का शिकार होना पड़ता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्र. 7

7. (i) सिंधु घाटी सभ्यता समृद्ध थी परंतु उसमें भव्यता का आडंबर नहीं (अ) था। निम्नलिखित तथ्य इस कथन को पुष्ट करते हैं :-

↳ सिंधु घाटी सभ्यता में औजार तो मिले हैं परंतु हथियार नहीं।

↳ यहाँ मिस्र के जैर की नावों जैसी बनावट वाली नावें मिली हैं परंतु वे आकार में छोटी हैं।

↳ सिंधु घाटी के नरेश की मूर्ति में जितना छोटा सिरपेंच मिला है उससे छोटे सिरपेंच की कल्पना भी नहीं की जा सकता।

↳ यहाँ आडंबर नहीं है क्योंकि न तो भव्य राजप्रासाद मिले और न ही भव्य मंदिर आदि।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सिंधु घाटी सभ्यता "लो प्रोफाइल सभ्यता" थी यानी लघुता में भी महानता का अनुभव कराने वाली सभ्यता।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्र.07

16

7. (ii) (अ) मुअन जो दड़ो के बड़े घरों में छोटे कमरे होने का अलग-अलग पुरातत्ववेत्ता अलग-अलग कारण देते हैं। ओम थानवी ने भी इसके कुछ कारणों पर प्रकाश डाला है।
माना गया है कि शहर की आबादी काफी रही होगी। इसीलिए बड़े घरों में छोटे कमरों की आवश्यकता पड़ी होगी।
संयुक्त परिवारों में ज्यादा परिवारजनों को ध्यान में रखते हुए इस प्रकार के घर बने होंगे।

एक कारण यह भी माना जा सकता है कि लोग कमरों का इस्तेमाल सिर्फ रात को सोने के लिए करते हों और ज्यादातर समय काम में या आँगन में बिताते हों क्योंकि यहाँ मिले अधिकतर घर 30 x 30 फुट के हैं जिनका आँगन बहुत बड़ा होता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in